

अपना मन म्यूजियम देखने जैसा

वे व्यक्ति मुझे कभी भी अच्छा नहीं लगता, उनका मुख देखते ही मुझे गुस्सा आ जाता है। यह बातें एक व्यक्ति ने दूसरे व्यक्ति से कहा, पर मेरा अभिप्राय आपसे भिन्न है। ये व्यक्ति के चेहरे पर की शांति और उसकी आँखों में झलकती करुणा देख उसके प्रति आदर, सम्मान आता है। दूसरे व्यक्ति ने कहा।

स्वयं में समाहित नकारात्मक भावनायें अपने व्यक्तित्व के सही मुल्यांकन तक पहुंचने नहीं देती। हमारा सब चिंतन और मुल्यांकन 'मैं' के गढ़े, तेड़े-मेड़े के रास्ते से ही आगे बढ़ते हैं। हम क्रोध करते हैं, दूसरे की उपेक्षा भी करते हैं। ये सब में हमारी नकारात्मक भावनायें ही कार्य करती हैं।

सुख-दुःख की बाबत में वे देव, इशकृपा, अपने पुण्य कर्म आदि को जवाबदेही मानते हैं, लेकिन बहुत सारे सुख-दुःख का अपना दृष्टिकोण भी महत्वपूर्ण भाग बजाता है। उसके बारे में विचार करने के लिए हमारा मन तैयार नहीं होता! दिमाग में लगे हुए जाले और परते दूर किये बिना अपने को 'दिव्य दर्शन' प्राप्ति की आश रखते हैं जो कि सत्य नहीं है।

समग्र्यता तथा देखने के बदले 'मैं कौन' के भाव से देखने के तरीके को अपनाने के कारण हमें दूसरे लोगों के साथ स्वच्छ एवं स्वस्थ संबंध अपना नहीं सकते। अति अनुराग भी जोखिम भरा है और अति वैराग्य भी जोखिम भरा है, इसलिए बुद्ध ने मध्यम मार्ग अपनाने का अमूल्य संदेश विश्व को दिया है।

ममत्व का बलिदान दिये बना समत्व का विकाश कभी भी हो नहीं सकता। ममत्व अंह को पुष्ट करता है लेकिन विकास का बाधक होता है।

ममत्व संग्रह करने को प्रेरित करता है

जबकि समत्व फैलते हुए ठंडक को अनुभव करने का प्रशिक्षण देता है।

यहां पर राजेन्द्र सिंह महाराज द्वारा दिया गया वृक्ष का दृष्टांत ध्यान में लाने योग्य है-

एक हराभरा वृक्ष फल-फूल से लदा हुआ था। उस वृक्ष पर अनेक पक्षी घोसला बनाकर आश्रय लेते थे। अनेक मुसाफिर उस शीतल छाया में आराम करते थे। वृक्ष के आस-पास रौनक का वातावरण बना रहता था। यह देखकर वृक्ष की खुशी का पारावार नहीं रहता। वृक्ष मन ही मन ऐसी अनुभूति करता था कि वे अनेक प्राणियों पर सहयोग कर उपकार कर रहा हो।

ऐसे वृक्ष का दिन बहुत ही खुशनुमा से बीत रहे थे। वृक्ष की आयु बढ़ने से उसमें परिवर्तन होना शुरु हो गया। नये फल-फूल पत्ते आने की प्रक्रिया धीमी हो गई। वृक्ष को थोड़ा झुकते देख प्राणी - पक्षियों ने आना भी बंद कर दिया। पक्षियों को लगा कि डालियां तो सूख गई हैं और कोई भी हरा-भरा नजर नहीं आता। छांव न होने के कारण मुसाफिरों ने भी वृक्ष के पास जाना छोड़ दिया। पक्षियों और मुसाफिरों के इस रवैये को देख वृक्ष निराश होकर विचार करने लगा कि मैं आज तक सबकी सेवा किया लेकिन आज वृद्धावस्था में मेरे साथ बात करने को भी कोई तैयार नहीं है।

एक दिन वहां एक महात्मा आ पहुंचे और वृक्ष के नीचे आराम के लिए रुके। अचानक ही महात्मा के उपर पानी की दो बुंदें गिरी। उपर नजर किया तो ऐसा लगा कि जैसे वृक्ष से आंसु निकल रहा है। संत ने वृक्ष से पूछा कि भाई आपके रोने का कारण क्या है?

वृक्ष ने कहा महात्माजी जब मैं तंदुरुस्त था तब मेरे पर हरे-भरे पत्ते और फल-फूल से लदा

हुआ था। मैं लोगों को खुब मदद कर रहा था लेकिन अब जब मैं वृद्ध हो गया हूँ। अभी मेरे पर न हरे-भरे पत्ते हैं और न ही फल-फूल। थोड़े दिन में ही मुझे काटने के लिए लोग आने वाले हैं। ये देख मुझे रोना आता है। वृद्धावस्था में मेरे पास आने वाले वा पूछने वाला कोई नहीं है। और कल मेरी मृत्यु हो जायेगी।

वृक्ष की व्यथा सुन महात्मा ने कहा - भाई, इसमें दुःखी होना या डरने की बात ही कहां है! आप अपने विचार करने के दृष्टिकोण में परिवर्तन कर दे। आप आज तक सबकी मदद करते आये हो, ये बराबर है? अब आप मान लें कि मरने से भी मैं सबकी मददगार बन रहा हूँ। लोग तुझे काट डालेंगे तो वे लकड़ी का उपयोग करेंगे। इस तरह लकड़ी भी किसी के कल्याण के लिए काम में तो आयेगी ना।

ऐसा नया विचार स्फुरित होते ही वृक्ष में प्रसन्नता का अनुभव हुआ और एक चमत्कार का सृजन हुआ। अचानक ही वृक्ष से अंकुर फूटने लगा। पत्ते विकसित होने लगे और वृक्ष हरा-भरा हो गया। इसलिए वृक्ष को काटने का विचार भी लोगों ने बदल दिया। नजर बदलते ही नज़ारा भी बदल गया।

अपनी जिंदगी को ही नहीं दूसरे की जिंदगी को बेहतर बनाने के अरमान ही अपनी जिंदगी को हरा-भरा बनाने के निमित्त बन सकते हैं। जग के नियम को भूलकर जहान् के कायदे को विचार किया तो मान लेना कि जगत और जग नियन्ता का अपराध किया।

कामनाओं से भरा मन कभी खुश नहीं रह सकता - ब्र.कु. हिमांशु

इन्दौर, मुसाखेडी। मनुष्य की इच्छायें परछाई की तरह हैं जिसे जितना पकड़ने का प्रयास करते हैं वह उतनी ही दूर होती जाती है। कामनाओं से भरा मन कभी खुश नहीं रह सकता क्योंकि कामना दुःख, अतृप्ति, और असंतुष्टता उत्पन्न करती है। वास्तव में एक निष्कामी व्यक्ति ही सच्ची खुशी का अनुभव कर सकता है।

उक्त उद्गार इंदौर शान्ति निवेशन वनी राजयोग शिक्षिका

ब्र.कु.हिमांशु द्वारा मुसाखेडी में आयोजित कार्यक्रम को संबोधित करते हुए व्यक्त किये। उन्होंने कहा कि केवल मनुष्य ही भौतिक वस्तुओं की इच्छा करता है। और उसे दूसरों मनुष्यों से प्रेम, स्नेह, सहयोग आदि की भी अपेक्षा रहती है। इसकी पूर्ति न होने पर मनुष्य दुःखी हो जाता है। व्यक्ति के मन की असीमित इच्छायें उसे सच्चे मार्ग से भटका देती है।

और वह आध्यात्मिकता से भी दूर हो जाता है। और उसकी स्थिति "दुविधा में दौड़ गये माया मिली न राम" वाली हो जाती है। इसलिये यदि हमें खुश रहना है तो इच्छाओं और कामनाओं

का त्याग करना होगा। कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रही ब्र.कु.सुमित्रा बहन ने कहा कि वर्तमान समय में हर मनुष्य को कोई न कोई भय जरूर रहता है कोई आने वाली मृत्यु से, कोई धन चले जाने से, कोई बीमारी के भय से, कोई सम्बन्धों में टकराव के भय से, कोई भविष्यवक्ताओं के विनाश की भविष्यवाणी के कारण विनाश के डर से, कोई

प्राकृतिक आपदाओं के भय से, इस तरह अनेक तरह के भय से त्रस्त मानव जीवन जीता है। और इस तरह तनाव में रहने के

कारण सुख का अनुभूती नहीं होती है। इन सभी भय से मुक्त होने का साधन है राजयोग मेडिटेशन। मनुष्य को अपने वास्तविक स्वरूप की पहचान, परमात्मा का परिचय, सृष्टि चक्र का ज्ञान दिया जाता है। जिससे सहज ही समस्त प्रकार के भय से मुक्त होकर मनुष्य सुखमय जीवन व्यतीत कर सकता है।

इस कार्यक्रम में शहर के गणमान्य व्यक्तियों के अतिरिक्त हजारों लोगों ने भाग लिया।



रायपुर। अन्नामलाई युनिवर्सिटी के साथ संयुक्त रूप से संचालित एम.बी.ए. पाठ्यक्रम का उद्घाटन करते हुए पुलिस महानिरीक्षक आनंद तिवारी, क्षेत्रीय संचालिका ब्र.कु.कमला, आर.संगीता राव।



प्रेम नगर, इन्दौर। विधायक मालिनी गौड़ को ईश्वरीय संदेश देने के पश्चात् सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु.शशी बहन।



सिवनी। 'प्लेटिनम जुबली' पर आयोजित कार्यक्रम को सम्बोधित करते हुए डॉ.प्रभा मिश्रा तथा मंचासीन हैं ब्र.कु.कमला दीदी, विधायक निशा पटेरिया, विधायक कमल मर्सकोले तथा अन्य।



जबलपुर। आर्मी स्कूल में आयोजित समर कैम्प में बच्चों को सम्बोधित करते हुए ब्र.कु.विनीता बहन।



इन्दौर। एम.जी.इन्स्टिट्यूट में विद्यार्थियों को राजयोग का ज्ञान देते हुए ब्र.कु.डॉ.जमीला बहन।



पलौद, आरंग। नवनिर्मित भवन का उद्घाटन करते हुए क्षेत्रीय संचालिका ब्र.कु.कमला, बलदाऊ चंद्राकर, ब्र.कु.प्रीती बहन, ब्र.कु.किरण तथा अन्य।

